जब जरुरत थी चमन को खून ए जिगर हमने दिया

बाबू राम पँवार
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
राष्ट्रीय वीर गुर्जर महासभा
मो. नं. 8958901114

देश की स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध आंदोलन के लिए प्रथम अंकुर 1822 में कुंजा बहादुरपुर से फूटे थे। जिला हरिद्वार की तहसील रुड़की के परगना भगवानपुर में गुजरों का एक ताल्लुका था कुंजा। सन 1819 में कुड़ा सिँह के स्वर्गवास के बाद विजयसिँह इसका उत्तराधिकारी बना। विजयसिँह असाधारण महत्वाकांक्षी ताल्लूकेदार था। ईस्ट इंड़िया कम्पनी की नाजायज हरकतों के कारण अंग्रेजों का कट्टर शत्रु हो गया था। अपने बुजुर्गों द्वारा तलवाजर की शक्ति तथा प्रजा रंजन द्वारा प्राप्त रियासत जिसे अराजकता के दिनों में उनके पूर्वजों ने समय क्षेत्र में सुरक्षित रख कर जो यश प्राप्त किया था, उसे अंग्रेजों द्वारा नष्ट होते देखा और अनुभव किया कि आजादी की ये आग जो उसके भाइयों तथा लाखों ही नहीं करोड़ों इंसानों के अंदर जल रही है, बिना बलिदान के किसी तरह नहीं बुझ सकती। उसने निश्चय कर लिया कि जब तक हमारे हाथ में तलवार रहेगी, तब तक हमारी जमीन कोई नहीं ले सकता और उसने एक व्यापक आंदोलन की तैयारी कर दी। अपने राज्य स्थिर करने के लिए उसने कुंजा से चारों ओर फरमान (हुकुमनामें) जारी कर दिए। एक हजार आदमियों की फौज उसके पास रहने लगी। उसने हुकुम जारी कर दिया कि कैदियों को जेल से रिहा कर दो और ऐलान जारी कर दिया कि विदेशियों को अपने देश से बाहर कर दो। इन सबका केंद्र स्थान कुंजा बहादुरपुर (भगवानपुर) के राजा विजयसिँह का किला था। उसने आसपास के सब बड़े-बड़े जमींदारों को अपने साथ मिला लिया और कम से कम मेरठ और मुरादाबाद में विजयसिँह का खास प्रभुत्व स्थापित हो गया। सम्भावना ये है कि दूर-दूर के जिलों में उनका प्रभाव था। कटारपुर, भगवानपुर, रुड़की और ज्वालापुर आदि पर विजयसिँह का प्रभाव था। तहसील का खजाना और कस्बों को भी इन्होंने लूटा। देहातों से सीधी मालगुजारी वसुल करनी आरम्भ कर दी। राजा विजयसिँह व सेनापति कल्याणसिँह 3 वर्षों तक अजेय रहे और अक्टूबर 1824 को संधि के लालच से धोखे से कुंजा पर अंग्रेजों ने हमला कर दिया। दिन रात बराबर की लड़ाई रही। अंग्रेजों की ओर से गोरखा फौज और शौरी के आदमी तलवार और संगीनों से लैस थे। इस लड़ाई में राजा विजयसिँह और उनका सेनापति कल्याणसिँह मारे गये। उनके अंत के साथ ही इस बड़े आंदोलन का अंत हो गया। यहाँ से बचे हुए आंदोलनकारियों, भूरे और कूड़ा गुर्जर ने अपनी लड़ाई जारी रखी। जनवरी 1825 में उन्होंने फिर हिम्मत की अंग्रेजों के खिलाफ फिर अपना आंदोलन शुरु किया।

अपना मुख्यालय ऋषिकेश बनाकर भर्ती शुरु कर दी और हरिद्वार के आसपास आंदोलन शुरु किया। पूरे क्षेत्र को आंदोलन से जोड़ लिया। कुंजा में घायल भूरा मर गया और कूड़ा अंग्रेजों से मुकाबला करते हुए शहीद हो गया।

विजयसिँह के 1824 में स्वंतत्रता के लिए आंदोलन में मारे जाने के बाद कुंजा ताल्लुका अंग्रेजों ने अपने चाटुकार जमींदारों में बांट दिया। राजा विजयसिँह का वक्ष और उसके सेनापति कल्याणसिँह का सिर लौहे के पिंजरे में देहरादून जेल के फाटक पर रखा गया, बाद में सन 1947 तक उनका वक्ष और सिर रुड़की विश्वविद्यालय रुड़की (आज के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की) के म्युजियम हॉल में रखा रहा। इससे ये अवगत होता है कि-

जब जरुरत थी चमन को खून ए जिगर हमने दिया

अब जब खिले फूल तो कहते हैं तुम्हारा नाम नहीं ।

इस आंदोलन के नतीजे कुछ भी रहे हों लेकिन देश के लिए स्वतंत्रता आंदोलन की ये एक नींव थी जो 1857 से परवान चढ़नी शुरु हुई। 1822 में स्वतंत्रता आंदोलन के जो अंकुर कुंजा बहादुरपुर से फूटे थे उसने 1857 में सम्पूर्ण रूप ले लिया था। 1857 के आंदोलन में जनता को हिंदुस्तानी सैनिकों का भी समर्थन प्राप्त था। 1857 की शुरुआती लड़ाई के नायक कोतवाल धनसिँह गुर्जर थे। 1857 में धनसिँह गुर्जर मेरठ के कोतवाल थे। कोतवाली के पीछे लिसाढी गेट गुर्जरवाडे का मुख्य द्वार था। कोतवला धनसिँह गुर्जर ने 10 मई को जेल का दरवाजा खोलकर क्रांति की शुरुआत करायी। इसके बाद लोग हथियार लेकर फिरंगियों के खात्में के लिए निकल पड़े। खजाने, शस्त्रागार और महत्वपूर्ण ठिकानों पर कब्जा कर लिया गया। मेरठ में अंग्रेजों का पूरी तरह सफाया करने के बाद क्रांतिकारी 'दिल्ली चलो' नारे लगाते दिल्ली की तरफ रवाना हो गये। दिल्ली में चंद्रावल के दयाराम (खारी गुर्जर) के नेतृत्व में एकत्रित होकर दिल्ली के रेजीडेंट मेटकाफ हाउस पर धावा बोल दिया। मेटकाफ हाउस को जला ड़ाला और वजीराबाद मैगजीन से बारुद और बंदूकों को अपने कब्जे में ले लिया। अंग्रेज लिखते हैं कि- गुर्जर भी ढ़ेरों निकल पड़े। वजीराबाद और चंद्रावल से निकलकर झुण्ड के झुण्ड प्रत्येक दिशा में लूटमार कर रहे थे। मेटकाफ हाउस को चंद्रावल के जमींदारों(गुर्जरों) ने लूटा और बाद में उसे जला ड़ाला। प्रत्येक यूरोपियन निर्दयता से कत्ल कर ड़ाले गये।

उधर फतेहपुर बेरी (दिल्ली) से नाहर सिँह गुर्जर (तंवर) के नेतृत्व में एक बहुत बड़ा गुर्जरों का दल राजधानी की ओर सरकने लगा। कप्तान डलगस, कमिश्नर फेजर और चीफ कमिश्नर हाकिंस के मकानों पर धावा बोलकर डलगस और फेजर का सफाया कर दिया गया। नाहरसिँह के दल में मिर्जा नाम का एक व्यक्ति भी था। उसने मिसिज हाकिंस की अंगूठी उतरवा ली थी।

नाहरसिँह को जब इसका पता चला तो उसने मिर्जा का सिर कलम कर दिया और वह अंगूठी को वापिस करने आया। मिसिज हाकिंस कोठी की तीसरी मंजिल पर रहती थी। वहाँ कड़ी पहरेदारी थी। नाहरसिँह किसी तरह वहाँ पहुँचा मिसिज हाकिंस को अंगूठी वापिस कर मूड़ ही रहा था कि उसको पहरेदारों ने गोलियों से भून डाला। मिसिज हाकिंस अपने कमरे में लौट आयी उसे जितनी खुशी अंगूठी मिलने की थी उससे अधिक दु:ख नाहरसिँह गुर्जर के बलिदान का था। इसको अंग्रेज भी स्वीकारते हुए यूँ लिखते हैं- 1857 के विद्रोह में सबसे अधिक विद्रोही गुर्जर थे लूटमार करना, धन छिनना, अंग्रेजों को मारना उनका खास काम था। लेकिन उन्होंने अंग्रेज महिलाओं की न बेइज्जती की, न अंगूठी उतरवायी । बलात्कार व व्यभिचार का तो कोई काम गुर्जरों द्वारा अंग्रेज महिलाओं पर नहीं किया गया।

दिल्ली, मेरठ, रुड़की, अम्बाला, बुलंदशहर, सहारनपुर, ग्वालियर की छावनियों के चारों ओर बसे हुए गुर्जरों ने आग की तरह अंग्रेजों के विरुद्ध आंदोलन में एक गाँव से दूसरे गाँव में संगठित होकर खुलेआम मुकाबले पर आ गये। इंटेलीजेंस रिकाड़ इसकी पुष्टि इस तरह से करता है- अंग्रेजों के साम्राज्यवाद के विरुद्ध स्वरुप हिंसा और अराजकता पैदा करने में शासन तंत्र उलटने में गुर्जर उत्तरी भारत में सर्वप्रथम थे। विद्रोही सेना का साथ देने में उन्होंए सर्वस्व की बाजी लगा दी। सारी छावनियों के यातायत, डाक और तार की व्यवस्था उन्होंने सबसे प्रथम भंग कर दी। अंग्रेजों को मालगुजारी देना बन्द कर दिया। उन (अंग्रेजों) पर आयी इस आपत्ति में गुर्जरों ने सबसे अधिक हिस्सा लिया।

दादरी (बुलंदशहर) के बिशन सिँह, भगवत सिँह, कटहेड़ा के उमरावसिँह, अट्टा असावर के कान्हा सिँह व इंद्र सिँह, नंदवासिया के एमनसिँह, जनमैदपुर, राजपुर अट्टा, गुणपुरा के दरियाव सिँह, सुरजीत सिँह, नत्था सिँह, रामबक्श मुण्डसाना वालों ने जिले बुलंदशहर भर में हापुड़, गाजियाबाद, सिकंदराबाद तक के कुल इलाके में अंग्रेजी राज्य को खत्म करके आजादी का झण्ड़ा गाड़ दिया । जेल तोड़ दी। तहसील, थाने, कचहरी, डाक बंगले सब फूँक दिये। डाक के घोड़े, हरकारे अपने कब्जे में कर लिए। इसी वर्णन को एडवर्ड बलफोर लिखते हैं- सन 1857 के प्रसिद्ध गदर में दिल्ली के चारों तरफ गुर्जरों के गाँव पिछले 50 वर्ष तक बिल्कुल शांतिपूर्ण रहने के बावजूद एकदम विद्रोही हो गये और उन्होंने तमाम जिलों को, उनके महत्वपूर्ण अधिकारियों को लूटमार और हत्याओं द्वारा आतंकित कर दिया । ब्रिटिश शासन कुछ समय के लिए बिल्कुल खत्म हो गया और गुर्जरों तथा उनकी तरह दूसरी जातियों (रांगड़ों) ने भी खुलेआम अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत कर दी ।

मेरठ परीक्षितगढ़ में गुर्जरों ने चौधरी कदम सिँह को अपना राजा घोषित कर दिया । अंग्रेज पुलिस को वहाँ से निकाल बाहर कर दिया । चौधरी कदमसिँह की कमान में 10,000 फौज संगठित

हो गयी। इसके लिये अंग्रेज लिखते हैं- इस समूचे इलाके के गुर्जर लोग पूरी तरह खुले विद्रोह पर उतारु हैं। उन्होंने परीक्षितगढ़ के कदमसिँह गुर्जर को मेरठ के पूर्वी परगनो का राजा घोषित कर दिया है । इसमें कदमसिँह की मर्जी थी या नहीं ये नहीं कहा जा सकता । इसके बाद हमारी पुलिस को परीक्षितगढ़ से निकाल बाहर कर दिया गया है उन पुलिस वालों की सूचनानुसार गुर्जरों ने परीक्षितगढ़ किले को खोदकर तोपें निकाल ली हैं और तीन तोपें बुर्ज पर चढ़ा दी गई हैं । गुर्जर गवर्नमेंट बनाने की अपनी सुनिश्चित योजना के अंतर्गत बुकलाना और हिम्मतपुर समेत अनेक गाँव के गुर्जरों ने खासतौर से परीक्षितगढ़ निकटवर्ती गुर्जर गाँवों ने खुलेआम विद्रोह कर दिया है और वे सरकारी ठिकानों पर तथा सरकार के मित्रों पर सशक्त आक्रमण कर रहे हैं । कदमसिँह की कमान में 10,000 की फौज भी संगठित हो गयी है ।

सहारनपुर जिले में मानकपुर आदमपुर के उमरावसिँह ने अपने आपको राजा घोषित करके अंग्रेजों को सीधी चुनौती दे दी और अंग्रेज फौजों से मुकाबला करके भी मालगुजारी वसूल करने में कामयाब रहा। बुढ़ाखेड़ा के चौ. फतेहजंग ने भी इस आंदोलन में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया । इसके लिए सहारनपुर गजेटियर में वर्णन है – चार दिन में तमाम सरकारी स्थान जिले भर में गुर्जरों के अधिकार में आ गये । गुर्जर और मुसलमान राजपूत विद्रोही रहे, उन्होंने स्वतंत्रता के इस युद्ध में रोड़ा अटकाने वाली दूसरी जातियों के गाँवों को, जो अंग्रेजों के वफादार थे, समझाने बुझाने पर भी न मानने पर उन्हें बर्बाद कर दिया । जिले सहारनपुर में बेयर्ड, स्मिथ, स्पिनकी आदि सैनिक अधिकारियों और उनकी सेनाओं को गुर्जरों ने अनेक स्थानों पर भारी क्षति पहुँचायी और तहसील नकुड़ सहारनपुर, रुड़की, देवबंद में पूरी-पूरी आक्रमणआत्मिक कार्यवाही की । गदरहेड़ी, बाबूपुर, मानकपुर आदमपुर, बुढ़ाखेड़ा, फतेहपुर, रणदेवा, सढ़ोली, सांपला आदि सैकड़ों गाँव विद्रोही होकर जिले भर में छा गये । नकुड़ तहसील के आसपास लखनौती, गंगोह, सरसावा, देवबन्द के आसपास पुरकाजी तक का तमाम इलाका गुर्जरों के प्रभाव में आ गया । मानकपुर आदमपुर का गुर्जर सरदार अंग्रेजों को चुनौती देकर राजा बन गया और फौजों से मुकाबला करके भी माल गुजारी वसूल करने में कामयाब रहा । मंगलौर और पुरकाजी के चारों ओर गुर्जर स्वतंत्र हो गये । सहारनपुर शहर पर भी उन्होंने आक्रमण किये ।

यह गद्यांश गुर्जरों का सम्पूर्ण इतिहास खण्ड -1 गुर्जरों की उत्पत्ति एवं विस्तार से लिया गया है|

****